E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2023; 5(1): 295-296
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 02-01-2023
Accepted: 07-02-2023

आदर्श प्रसाद
विद्यार्थी, स्नातकोत्तर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, मांडर कॉलेज मांडर, रांची यूनिवर्सिटी, झारखंड, भारत

Corresponding Author:
आदर्श प्रसाद
विद्यार्थी, स्नातकोत्तर, राजनीतिक विज्ञान विभाग, मांडर कॉलेज मांडर, रांची यूनिवर्सिटी, झारखंड, भारत

हमारा 22 साल का झारखंड

आदर्श प्रसाद

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2023.v5.i1d.391

सारांश
झारखंड राज्य की स्थापना 15 नवंबर 2000 को हुई एवं आज झारखंड 22 साल का हो गया है। झारखंड राज्य के निर्माण के लिए झारखंड के निवासी एवं अनेक विद्वान स्वतंत्रता से पूर्व से प्रयासरत रहे हैं। परंतु जिस उद्देश्य से झारखंड राज्य हेतु इतने आंदोलन हुए क्या अलग राज्य बनने का लाभ झारखंड के निवासियों को प्राप्त हुआ है?इस स्थापना दिवस पर हम झारखंड के विकास पर चर्चा करेंगे एवं चुनौतियो पर गहन मंथन करेंगे।

झारखंड में पूरे देश का 40% खनिज मिलता है परंतु खनिज संपदा होने के बावजूद झारखंड पूरे देश में पिछड़े राज्य क्यों है ? झारखंड में इंजीनियरिंग सेक्टर एवं इनफॉरमेशन एवं टेक्नोलॉजी सेक्टर को बढ़ावा क्यों नहीं मिलता है? झारखंड में किसान सम्मन निधि सहयोग तो दी जाती है परंतु कृषि में वृद्धि के लिए शिक्षण एवं नई तकनीकी को बढ़ावा क्यों नहीं मिलता है? झारखंड में छोटा नागपुरी एवं संथाली भाई बहन बहुतही महत्वपूर्ण मानव संसाध परंतु इनका सदुपयोग नहीं हो पा रहा है झारखंड सरकार को, झारखंड के विकास के लिए एवं यहां के निवासियों के जीवन स्तर, शिक्षा, स्वास्थ्य में वृद्धि लाने के लिए, देश के किसी भी सूचकांक में झारखंड को अव्वल राज्यों में से एक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

कुटशब्दः आंदोलन, नीति आयोग, खनिज संपदा, कृषि, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, जीवन निर्वाह, सतत विकास

प्रस्तावना
भारत के 28वें राज्य के रूप में, झारखंड राज्य की स्थापना 15 नवंबर 2000 को हुई। झारखंड का भौगोलिक क्षेत्रफल 79,716 वर्ग किलोमीटर (30,779 वर्ग मील) है। आज झारखंड 22 साल का हो गया है झारखंड राज्य पहले बिहार का हिस्सा हुआ करता था। बिहार का दक्षिणी भाग के 45.8 प्रतिशत हिस्से को अलग कर एक अलग राज्य के रूप में, झारखंड राज्य के रूप में 2000 ईस्वी में स्वीकृति मिली। झारखंड का निर्माण: झारखंड राज्य के निर्माण हेतु यहां के निवासी एवं अनेक विद्वान स्वतंत्रता से पूर्व से प्रयासरत थे। चाईबासा निवासी जे बार्थोलमन 1912 में क्रिश्चियन स्टूडेंट ऑर्गनाइजेशन की स्थापना की इन्हें झारखंड आंदोलन के जन्मदाता माना जाता है इसके उपरांत झारखंड राज्य के निर्माण के उद्देश्य से अनेक लगभग 15 संगठन या समिति का उदय हुआ। जैसा कि छोटा नागपुर उन्नत समाज, किसान सभा, झारखंड पार्टी, बिरसा सेवा दल, अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद, हुल झारखंड पार्टी, झारखंड मुक्ति मोर्चा, आजसू ।अंत में 1995 में झारखंड स्वशासी परिषद जैक का स्थापना हुआ। 9 अगस्त 1995 को जय का औपचारिक गठन हुआ जिसके अध्यक्ष शिबू सोरेन थे। जैक के अंतर्गत बिहार के 18 जिलों को सम्मिलित किया गया था। इस परिषद को कृषि, खनन, ग्रामीण विकास, सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा अनुसूचित जनजाति समेत 40 विभाग का सौंपा गया था। केंद्र में अटल बिहारी वाजपेई के नेतृत्व में गठित राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार ने 1997 में बिहार विधानसभा में पारित संकल्प के आधार पर वनांचल राज्य से संबंधित बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक तैयार किया एवं स्वीकृति के लिए राबड़ी देवी के नेतृत्व वाली बिहार सरकार को भेजा गया। इस विधेयक में बिहार के 18 जिलों को मिलाकर अलग राज्य वनांचल की मांग की गई, जिसे विधान सभा में अस्वीकृत किया गया।

श्रीमती राबड़ी देवी की अल्पमत सरकार में कांग्रेस के दबाव में 25 अप्रैल 2000 को पृथक झारखंड राज्य के गठन हेतु बिहार राज्य पुनर्गठन विधेयक को स्वीकृत प्रदान की गई। यह विधेयक 2 अगस्त 2000 को राज्यसभा में 11 अगस्त 2000 को लोकसभा में पारित हुआ। 25 अगस्त 2000 को राष्ट्रपति ने हस्ताक्षर कर स्वीकृति प्रदान की और 15 नवंबर 2000 को झारखंड राज्य का गठन हुआ।

भारत के सूचकांक में झारखंड की स्थिति
2021 बहुआयामी गरीबी सूचकांक (एमपीआई) रिपोर्ट के अनुसार, झारखंड की 42.16% आबादी बहुआयामी रूप से गरीब है, जो इसे भारत का दूसरा सबसे गरीब राज्य बनाता है। नीति आयोग स्वास्थ्य सूचकांक 2021 के अनुसार, झारखंड 47.55

अंकों के साथ समग्र स्वास्थ्य प्रदर्शन के मामले में 19 बड़े राज्यों में से 13वें स्थान पर है।नीति आयोग द्वारा जारी सूचकांक रिपोर्ट के अनुसार, एसडीजी (सतत विकास लक्ष्य) भारत सूचकांक 2020-21 के तीसरे संस्करण में 28 राज्यों में झारखंड दूसरे सबसे खराब स्थान पर है, जबकि जीरो हंगर पैरामीटर में भी सबसे खराब है। जीरो हंगर पैरामीटर पर झारखंड 2019-20 के सूचकांक की तुलना में तीन अंक नीचे खिसक गया है। इस पैरामीटर पर राज्य का स्कोर मात्र 19 रहा, जो देश में सबसे कम है। रिपोर्ट के अनुसार 2019-20 में झारखंड का स्कोर 22 था। नीति आयोग द्वारा जारी स्कूल एजुकेशन क्वालिटी इंडेक्स में शासन प्रक्रिया सहायक परिणाम श्रेणी में,बड़े राज्यों में केरल सबसे आगे है, जिसका स्कोर 79.0 प्रतिशत है, जबकि थारखंड का स्कोर सबसे कम 21.0 प्रतिशत है। जबकि झारखंड का स्कोर सबसे कम 21.0 प्रतिशत है।

झारखंड का विकास वर्ष 2019-20 की आर्थिक मंदी और कोविड-19 महामारी के दौरान हुए आर्थिक गतिविधियों में संकुचन के बावजूद, वर्ष 2000–2001 से वर्ष 2020-21 में राज्य की अर्थव्यवस्था में लगातार सुधार हुआ है। न केवल विकास दर पूर्ववत हो गया है, बल्कि इसमें उत्तरोत्तर विकास की प्रबल संभावना बनी हुई है। झारखंड की वास्तविक आय में वर्ष 2011-12 से 2018-19 के बीच 6.2 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से वृद्धि हुई। वित्तीय 2019-20 में देश की आर्थिक मंदी के कारण एवं वर्ष 2020-21 मे कोरोना एवं उसके कारण हुए बंदी के कारण राज्य का विकास थम सा गया है। पिछले वर्ष की तुलना वर्ष 2019-20 में राज्य की कुल वास्तविक आय में मात्र 1.1 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई और वर्ष 2020-21 में तो इसमें 5.5 प्रतिशत की कमी आयी। विकास के बाधक तत्वों के दूर होने एवं विकास उन्मुखी प्रयास किये जाने पर यह राज्य देश के अग्रगणी राज्यों में से एक हो जायगा। झारखंड की वास्तविक आय में वर्ष 2011-12 से 2018-19 के बीच 6.2 प्रतिशत की औसत वार्षिक दर से वृद्धि हुई. वित्तीय 2019-20 में देश की आर्थिक मंदी के कारण एवं वर्ष 2020-21 मे कोरोना एवं उसके कारण हुए बंदी के कारण राज्य का विकास थम सा गया था. पिछले वर्ष की तुलना वर्ष 2019-20 में राज्य की कुल वास्तविक आय में मात्र 1.1 प्रतिशत की ही वृद्धि हुई और वर्ष 2020-21 में तो इसमें 5.5 प्रतिशत की कमी आयी. वर्ष 2021-22 में 10.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ राज्य की आय पूर्ववत हो गयी।

झारखंड के चुनौतियां

सर्वप्रथम बाबूलाल मरांडी झारखंड के मुख्यमंत्री बने अब तक झारखंड में 6 व्यक्ति मुख्यमंत्री पद पर आसीन हो चुके हैं और तीन बार राष्ट्रपति शासन भी लागू हुआ है । वर्तमान में झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन हैं । ध्यान देने की आवश्यकता है कि 22 साल में झारखंड का विकास कितना हुआ एवं क्या झारखंड की निवासी 22 साल में झारखंड में बदलाव देखे हैं ? हमारे समक्ष निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रश्न एवं चुनौतियां हैं। झारखंड सरकार या मुख्यमंत्री झारखंड के विकास के लिए कितने प्रयासरत हैं ? झारखंड के निवासी के विकास के लिए ऐसे कितने कार्यक्रम या अभियान चलाए गए जिससे इन्हें झारखंड में नए राज्य बनने का लाभ प्राप्त हुआ है ? क्या झारखंड में शिक्षा का स्तर रोजगार की अवसर स्वास्थ्य एवं पौष्टिक भोजन की पूर्ति शुद्ध पेयजल जैसी बुनियादी आवश्यकता है? और यह जन-जन तक पहुंच पाई है ? झारखंड में पूरे देश का 40% खनिज मिलता है परंतु खनिज संपदा होने के बावजूद झारखड पूरे देश में पिछडा राज्य क्यों है ? झारखंड में इंजीनियरिंग सेक्टर एवं इनफॉरमेशन एंड टेक्नोलॉजी सेक्टर को बढ़ावा क्यों नहीं मिलता है ? क्या इसके लिए पर्याप्त एवं अच्छे शिक्षण संस्थान एवं कंपनी झारखंड में है? झारखंड का 65 से 70% आबादी कृषि पर जीवन निर्वाह के लिए आधारित है परंतु झारखंड में कृषि पद्धति में भी कोई खास सुधार दिखाई नहीं देता है । मानसून पर आधारित झारखंड में कृषि आज भी सुख आ जाने पर फसल को बर्बाद होते देखा है । इसकी क्षतिपूर्ति के लिए क्या सिर्फ किसान निधि सहयोग राशि पर्याप्त है ? या कृषि में विधि लाने के लिए नई तकनीकी का प्रयोग होना चाहिए क्या सरकार सिर्फ राशि तक सीमित रहेगी या सरकार को तकनीकी विकास पर जोर देना चाहिए ? आज बहुत महत्वपूर्ण हो गया है कि झारखंड निवासी इस विचार पर विचार करें कि झारखंड कैसा है एवं झारखंड को कैसा होना चाहिए ? झारखंड के विकास के लिए इन सवाल पर गहन विचार कर पहल लेने की अत्यंत आवश्यकता है जिससे झारखंड का विकास हो सके ।

निष्कर्ष

झारखंड के विकास के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि झारखंड सरकार नई शिक्षा पद्धति अपनाए, नई तकनीकी ज्ञान को अन्य क्षेत्र जैसे कृषि, पशुपालन, नए- नए औद्योगिक की स्थापना जैसे कार्य में लगाए, जिससे इसका विकास हो एवं लोगों के जीवन स्तर एवं जीवन निर्वाह में परिवर्तन हो । सरकारी स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाना चाहिए जिससे कि बच्चों को सही शिक्षा दी जाए बच्चों को सही से शिक्षा दी जाए युवाओं को रोजगार की अवसर प्रदान करें एवं कृषि के विकास के लिए सिर्फ राशि नहीं तकनीकी उपलब्ध कारण एवं कृषि शिक्षक एवं सिंचाई की सुविधा दें जिससे मानसून पर निर्भरता को कम करने में मदद हो खनिज का सदुपयोग कर झारखंड के निवासियों के विकास के लिए औद्योगिक की स्थापना करना चाहिए। झारखंड के निवासी छोटा नागपुर के भाई-बहन संथाली भाई-बहन बहुत ही महत्वपूर्ण संसाधन है झारखंड के सरकार को इस मानव संसाधन का सदुपयोग कर झारखंड के विकास के कार्य में प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है ताकि इनका विकास हो सके जिससे जीवन स्तर शिक्षा स्वास्थ्य में विधि हो जिस देश के किसी भी सूचकांक में झारखंड पिछले राज्य में नहीं बल्कि अव्वल राज्यों में से एक हो।

संदर्भ

1. डॉ. राम कुमार तिवार "झारखंड के रूप रेखा" पब्लिकेशन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना 2019
2. डॉ. बी. वीरोत्तम "झारखंड इतिहास एवं संस्कृत" पब्लिकेशन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी पटना 2019
3. एम के सिंह "झारखंड विकास एवं राजनीति सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ" पब्लिकेशन झारखंड झरोखा 2011
4. https://dsel.education.gov.in/sites/default/files/2020-08/Jharkhand.pdf
5. https://www.drishtiias.com/pdf/1640736491.pdf
6. https://www.niti.gov.in/sites/default/files/2019-09/seqi_document_0.pdf
7. https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1775489